वृत्तपत्राचे नाव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैद्राबाद
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 14-02-2008
कटिंग नंबर:

जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि

'आत्मवत् सर्वभूतेषु'। अपनी आत्मा के समान जो दूसरे को देखता है, वही वास्तव में देखता है, जो दूसरे को अपने जैसा नहीं देख सकता, वह तो अन्धा है। जो देखता है, जैसा भौतिक शरीर मेरा, वही तेरा। जो मेरे भीतर शिव- विष्णु, वही तेरे में। वही नेत्र सूर्य मेरे, वही तेरे। जो ज्ञानेन्द्रियाँ मेरी, वही तेरी। यह भारत का वैदिक जीवन है। यह भारत का जीवन-दर्शन है। प्रतिभारत भारत का जीवन है।

– महर्षि महेश योगी

कोई सुखी कैसे और कब होता है, जब उसे शांति मिलती है। शांति कैसे और कब मिलती है, जब उसे सब कुछ मिल जाता है। अब बहुत से लोग यह कहते हैं कि सब कुछ है, सब कुछ मिल गया है, फिर भी शांति नहीं है, सुख नहीं है। ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं, क्योंकि ये सब कुछ मिलने का मतलब केवल भौतिक उपलब्धियों से जोड़कर देखते हैं। भौतिक उपलब्धियों में जब पाते हैं कि सब कुछ प्राप्त कर लिया, फिर भी सुख नहीं है, शांति नहीं है, इसका मतलब अभी भी सब कुछ नहीं पाया है। अभी भी कुछ पाना बाकी है। भौतिक उपलब्धियों में सब कुछ पा लेने के भ्रम में कुछ पाने की उत्कण्ठा का बाकी होना ही बताता है कि अभी भी सब कुछ नहीं पाया है। तो सब कुछ कहाँ और कैसे मिलता है ? यह जो सब कुछ है, यह मिलता है, आत्मचेतना में। आत्मचेतना में जब सम्पूर्ण शांति और सम्पूर्ण क्रिया-शक्ति जागृत हो जाती है, तो सब कुछ मिल जाता है। क्योंकि शिव की शांति, विष्णु की क्रिया-शक्ति अपने भीतर जागृत हो जाती है, तब सर्वज्ञता आ जाती है, सर्वसमर्थता आ जाती है।

यह अपने भारत की वेद-विद्या है। इस विद्या से भारत के लोग स्वयं भी सुखी रहते हैं और दूसरे को भी सुखी करते हैं। यह भारत का ज्ञान-दीप है। इस ज्ञान-दीपक से सबको उजाला मिलता है। अपनी वैदिक ज्ञान परम्परा में इस ज्ञान को जमा लो। वेद-विद्या के सारे विधानों को अपना लो। वैदिक-ज्ञान को, दैवी-शक्ति को अपने भीतर जगा लो। वैदिक विधानों से प्राकृतिक अनुकम्पा बनी रहती है। अपने घर के सदस्यों में इसे जगा लो। समाज के सब लोगों में इसे जगा लो। ग्रह-शांति, वास्तु-शांति करवाओ। जितने भी पारम्परिक वैदिक विधान हैं, सब अपना लो। इससे सामूहिक चेतना में देवी सहयोग बना रहता है।

यह मनुष्य शरीर समस्त सम्भावनाओं को लेकर पैदा होता है और वेद-विद्या इन समस्त सम्भावनाओं को जगा लेती है, जिससे पूर्णता व्यवहार में झलक सकती है। वेद क्या कहते हैं ?

मातृ देवो भव:, पितृदेवो भव:,
आचार्य देवो भव:, अतिथि देवो भव:।

सबमें देवत्व देखते हैं। जहाँ भी देखते हैं, ईश्वर की सत्ता को देखते हैं। आत्मचेतना को देखना ईश्वर को देखना है। ईश्वर को देखना आत्मचेतना को देखना है। स्वयं को देखना है। इसलिए जब आत्मचेतनावान होकर देखते हैं तो सबमें स्वयं को ही देखते हैं।

'आत्मवत् सर्वभूतेषु'। अपनी आत्मा के समान जो दूसरे को देखता है, वही वास्तव में देखता है, जो दूसरे को अपने जैसा नहीं देख सकता, वह तो अन्धा है। जो देखता है, जैसा भौतिक शरीर मेरा, वही तेरा। जो मेरे भीतर शिव- विष्णु, वही तेरे में। वही नेत्र सूर्य मेरे, वही तेरे। जो ज्ञानेन्द्रियाँ मेरी, वही तेरी। यह भारत का वैदिक जीवन है। यह भारत का जीवन-दर्शन है। प्रतिभारत भारत का जीवन है। इसीलिए अपनी भारतीय वैदिक ज्ञान-परम्परा में कहते हैं, जिसकी जैसी दृष्टि उसकी वैसी सष्टि।